जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी
शेखावाटी सन्मार्ग
भारत सरकार पंजीसन नं. : 72322/91
मामनुस्मर युद्ध्य च — जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़
सतीनां वै सतांचैव दातृणां विदुषा तथा।
आकरं गुण शीलानां लक्ष्मणदुर्गं मनोहरम्।।
नमोस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोस्तु रुद्रेन्द्र यमानिलेभ्यो नमोस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः।।
Mob: 9828665353
Web: www.srrividya.com
पाक्षिक/वर्ष-31/अङ्क - 27 लक्ष्मणगढ़ 1 दिसम्बर 2021 मूल्य (विशेषाङ्क सहित) 100/- रु.वार्षिक

पद्मश्री डॉ. सुंडाराम वर्मा की कृषि नवाचारों की कहानी

प्रदेश में जल संकट के चलते एक लीटर पानी में में पौधे लगाने की तकनीक विकसित की।दांता के कृषि वैज्ञानिक डॉ. सुंडाराम वर्मा को हाल ही में दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में पद्मश्री अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। डॉ. वर्मा को ये अवॉर्ड एक लीटर पानी में पेड़ लगाने की तकनीक विकसित करने पर दिया गया। अपने नवाचारों पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि खेती उनका पुश्तैनी काम है।

शुरू ये ही उनकी इच्छा थी कि खेती में कुछ नया करना चाहिए। इसी के चलते प्रदेश में पानी की कमी को देखते हुए कम पानी में पेड़-पौधे लगाने की ठानी और इसमें उन्हें सफलता भी मिली। डॉ. वर्मा ने बताया कि अब तक वे सीकर, जयपुर, जोधपुर व चूरू में एक लीटर पानी की तकनीक से 55 से 60 हजार पेड़ अब तक लगा चुके हैं।

अब ग्वार, गेहूं व पीली सरसों को लेकर वे शोध कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि 1972 में सीकर के कल्याण कॉलेज से बीएससी करने के बाद केवल कृषि पर कार्य करने की सोच के साथ काम किया। नौकरी करने की मंशा कभी नहीं रखी। उन्हें अध्यापक पद का ऑफर भी आया था, लेकिन ठुकरा दिया। खेती में नवाचार की शुरुआत उन्होंने स्वयं के खेत में एक लीटर पानी से पेड़ लगाकर की। इसमें उन्हें सफलता मिली तो हौसला बढ़ा और निरंतर जुटे रहे। कृषि के अपने पारिवारिक अनुभव व शैक्षिक पृष्ठभूमि के आधार पर उन्होंने किसानों के सम्मुख आने वाली समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया।

ऐसा करते हुए उन्होंने कृषि और वन विभाग, कृषि विश्वविद्यालयों, आईसीएआर संस्थानों व एएफआरआई द्वारा मूल्यांकित अनुसंधान गतिविधियों को भी विकसित किया। कृषि में नवीनतम तकनीकों के साथ पारंपरिक तरीकों का इस्तेमाल किया। वर्मा ने अर्धशुष्क रेगिस्तानी मैदानों में पौधरोपण की नई तकनीकें विकसित की हैं। इनमें पौधे को अपने पूरे जीवन में केवल एक लीटर पानी की जरूरत होती है। इन पौधों के जीवित रहने की दर 80 से अधिक है और वन, जलाशय विभाग तथा सीएसआर, ओएनजीसी के सहयोग से लगभग 60 हजार पौधे लगाए गए हैं। उन्होंने सतत कृषि द्वारा कृषि रोगों व कीटनाशक में कमी कर तथा आय बढ़ाने के लिए आदर्श उपज चक्र तैयार किया। इसमें पहले वर्ष में अनाज, दूसरे वर्ष में दालें व तिलहन तथा तीसरे वर्ष में सब्जियां, मसाले और औषधीय पौधे शामिल हैं। वर्मा को अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार और सम्मान प्राप्त कर चुके हैं।

महरिया बनी प्रदेश महासचिव

लक्ष्मणगढ़ युवा साहित्यकार व . कवयित्री विमला महरिया को समता साहित्य अकादमी की प्रदेश कार्यकारिणी में प्रदेश महासचिव बनाया गया है। महरिया का मनोनयन आदेश सोमवार को प्रदेशाध्यक्ष डॉ कांतिलाल यादव ने जारी किया। इसके साथ ही डॉ सरिता जैन को प्रदेश प्रभारी, रीना यादव को प्रदेश कोषाध्यक्ष जबकि डॉ भावेश कुमावत को संगठन महासचिव पद की जिम्मेदारी दी गयी है।

दिल्ली प्रवासी यशस्वी विप्र गौरव श्री बजरंगलाल जी मोलीसरिया परिवार द्वारा महान् पुण्यदायी कार्य सम्पन्न, स्व. श्रीमती द्रोपदी देवी मोलीसरिया की पुण्य स्मृति में रामगढ़ बाईपास पर यात्री विश्राम स्थल का निर्माण, भव्य लोकार्पण समारोह आयोजित

रामगढ़ शेखावाटी। रामगढ़ शेखावाटी के दिल्ली प्रवासी विख्यात समाजसेवी एवं विप्र गौरव एल्युमिनियम किंग श्री बजरंगलाल जी मोलीसरिया की धर्मपत्नी स्व. श्रीमती द्रोपदी देवी मोलीसरिया की पुण्य स्मृति में कस्बे के रामगढ़ बाईपास पर विशाल यात्री विश्राम स्थल का निर्माण मोलीसरिया परिवार द्वारा करवाया गया जिसका दिनांक 8.11.2021 को समारोहपूर्वक लोकार्पण किया गया।

दिल्ली प्रवासी श्री बजरंगलाल मोलीसरिया, उनके सुपुत्रों श्री सज्जन शर्मा, श्री पवन शर्मा व श्री मनोज शर्मा द्वारा निर्मित विश्राम स्थल का लोकार्पण नगरपालिका अध्यक्ष श्री दूदाराम चोहला ने फीता काटकर किया। समारोह में के मुख्य अतिथि पूर्व पालिकाध्यक्ष श्री रमाकान्त पुजारी, विशिष्ट अतिथि भामाशाह सम्मान से सम्मानित श्री राधेश्याम. ढंढ, सेवानिवृत एएओ श्री सुरेश शर्मा, पत्रकार श्री विजय शर्मा, ईओ श्री नूर मोहम्मद खान, श्री मदनलाल सैनी, नगरपालिका एएओ श्री योगेशकुमार शर्मा, थानाधिकारी श्री उमाशंकर शर्मा थे।

समारोह को अतिथियों द्वारा सम्बोधित करते हुए यात्रियों की सेवार्थ विश्राम स्थल को जनोपयोगी बताते हुए दूसरों को भी इस पुण्यदायी कार्य से प्रेरणा लेकर मानव हितार्थ कार्य करने की बात कही। कार्यक्रम में अतिथियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर नेता प्रतिपक्ष भंवरलाल सैनी, बनवारीलाल शर्मा, रामावतार ऊँटवालिया, योगेशकुमार शर्मा, सांतामल मोलीसरिया, मन्नालाल शर्मा, नन्दकिशोर व्यास, हेमन्तकुमार जांगिड़, अमित शर्मा, सुमित शर्मा, राहुल शर्मा सहित कस्बेवासी मौजूद थे। समारोह में पधारे हुए अतिथियों का श्री सज्जन शर्मा, श्री पवन शर्मा, श्री मनोज शर्मा ने शॉल, श्रीफल व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मान किया।

लक्ष्मणगढ़ नागरिक परिषद् भव्य सभागार का लोकार्पण

लक्ष्मणगढ़. प्रवासी भामाशाहों की ओर से नागरिक परिषद परिसर में लगभग 20 लाख की लागत से नवनिर्मित सभागार का लोकार्पण सोमवार को बऊ धाम के पीठाधीश्वर संत रतिनाथ व श्रीरघुनाथ मंदिर के महंत अशोकदास ने किया। पालिकाध्यक्ष मुस्तफा कुरैशी ने कहा कि यहां के प्रवासी बंधु अपनी * जन्मभूमि का गौरव बढ़ाने के लिए दिन-रात मेहनत करते रहते हैं। दान की सटीक व वास्तविक परिभाषा हमारे भामाशाहों ने ही चरितार्थ की है। कार्यक्रम को स्थानीय अध्यक्ष विष्णु भूत, केन्द्रीय सचिव राजेन्द्र व्यास, केन्द्रीय उपाध्यक्ष प्रवासी व्यवसायी जुगल किशोर जाजोदिया अर्जुन अवार्डी सुरेश मिश्रा आदि ने भी संबोधित किया। इस मौके पर सुंदरकांड पाठ भी हुआ।

विप्र वाहिनी राष्ट्रीय प्रमुख का स्वागत किया

लक्ष्मणगढ़ | विप्र फाउंडेशन द्वारा विप्र वाहिनी की राष्ट्रीय प्रमुख चंद्रकांता राजपुरोहित का रविवार को लक्ष्मणगढ़ में विप्र फाउंडेशन के तहसील अध्यक्ष प्रदीप दाधीच व प्रदेश उपाध्यक्ष ओम् प्रकाश जोशी के नेतृत्व में अभिनंदन किया गया। इस दौरान चंद्रकांता ने कहा कि ब्राह्मण समाज को एकजुट होकर आगे बढ़ना होगा और शास्त्र के साथ शस्त्र भी उठाना पड़े तो पीछे नहीं हटेंगे।

विप्र फाउंडेशन के शहर अध्यक्ष सुभाष सुरोलिया, महामंत्री एडवोकेट उमेश शर्मा, युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष भरत खुड़ीवाला, शशांक जोशी, अनिता शर्मा, विनीता शर्मा, मीनाक्षी शर्मा, ज्योत्स्ना पारीक, राजेन्द्र जोशी, हरीश शर्मा, प्रहलाद दाधीच, विश्वनाथ दाधीच, अश्विनी पारीक, नवीन आदि उपस्थित थे।

शिक्षकों ने विद्यालय विकास में दी सम्मान में मिली राशि

लक्ष्मणगढ़ | ब्लॉक स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में सम्मानित तीनों शिक्षकों ने सम्मान स्वरूप प्राप्त 5100-5100 रुपए विद्यालय विकास के लिए दे दिया।

लक्ष्मणगढ़ में ब्लॉक सम्मानित राजकीय सावित्री बालिका उमावि लक्ष्मणगढ़ की शिक्षक विमला महरिया, सीनियर स्कूल सूतोद के व्यख्याता विनोद कुमार चाहर व राप्राथि कुमास जाटान के रामावतार फगेड़िया ने अपने-अपने सम्मान राशि के चेक सीबीईओ को सौंप दिए।

40 रोगियों का ऑपरेशन होगा

रींगस. कस्बे के सीसीए शिक्षण संस्थान परिसर में रविवार को रोटरी क्लब के तत्वावधान में निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया गया। शिविर में होम्योपैथी डा. अजय सक्सेना, फिजियोथेरेपी के डा. भंवर सिंह ताखर व घरेलू नुस्खो से पीएस राजपूत ने मरीजों का निःशुल्क इलाज किया। शिविर में शंकरा आई व्हास्पिटल जयपुर की टीम ने गंभीर बीमारी से पीड़ित 40 रोगियों को ऑपरेशन के लिए चयनित किया।

इनका जयपुर में निःशुल्क ऑपरेशन किया जाएगा। इस दौरान पालिकाध्यक्ष अशोक कुमावत, बाबूलाल बावड़ीका, विजय खुंटेटा, रघुनाथ चौधरी, झाबर बिजारणियां, डा. कृतिका, डा. अमृत, दीनदयाल, सुमित काबरा व झाबर निठारवाल सहित स्काउट्स ने शिविर में सेवाएं दी।

सम्पादकीय

" सन्मार्ग एव सर्वत्र पूज्यतेनाऽपथ: क्वचित् "

आइए लक्ष्मणगढ़ के 215 वां स्थापना दिवस पर नगर के बारे में सोचें।

सीकर शेखावाटी के युवा संकल्प शील शासक श्री लक्ष्मण सिंह ने मात्र 18 वर्ष की उम्र में लक्ष्मणगढ़ का दुर्ग बनवा कर शुरू कर दिया था और मार्गशीर्ष शुक्ला पंचमी विक्रम संवत् 1864 को नगर को बसाने का शुभ मुहूर्त कर आसपास के गांवों से व्यापारी, पंडित, कृषक, वैद्य, आदि को ससम्मान बुलाकर नापित राजगीर एवं कलावंतों को बुलाकर जमीन जायदाद देकर बसाना शुरू कर दिया था। इसके 1 दिन बाद से ही धनाड्य लोगों एवं गुणी जनों को पत्र दे देकर बुलाया था इस गुण ग्राही राजा ने। निश्चित ही इस शुभ कार्य में उनकी पूज्या माता चंपावत जी चूरू की राजपुत्री उनके दूरदर्शी मंत्रियों व सलाहकारों का परामर्श भी रहा होगा। बिना प्रजा जनों के आर्थिक आधार पुष्ट हुए बिना कोई नगर बसता भी नहीं।

सर्वरंयाः राज्यस्य मूलं-धर्म, तंडुल प्रस्थ मूला:।अर्थस्य मूलं राज्यम्।

निश्चित ही तब आसपास के गांवों से सभी जातियों, कौमों के प्रजा जन आए होंगे और तब चोर, डाकुओं से निर्भय होकर इस युवा बलशाली शासक की भुजाओं के आश्रय में, नीति

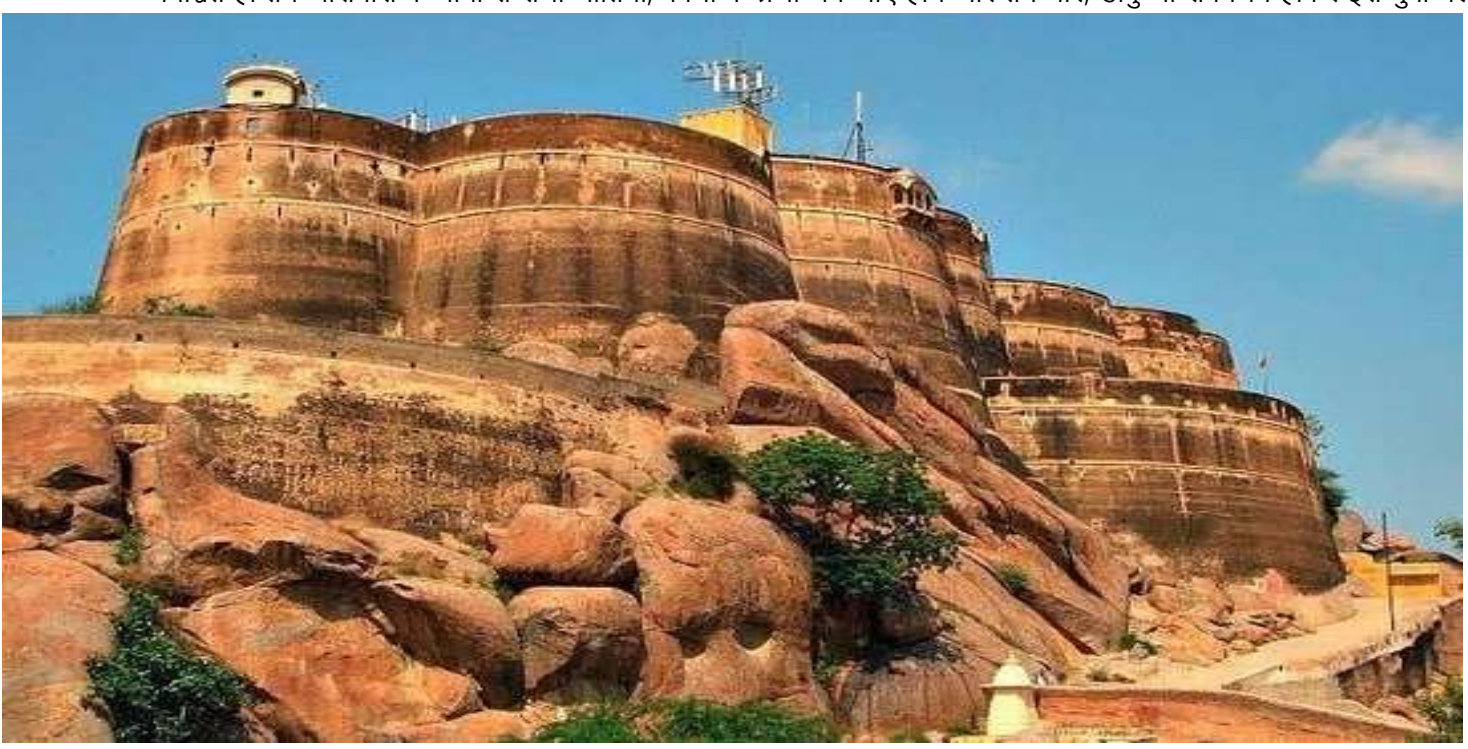

निपुण शासक के अधीन धर्म आश्रय में प्रजा बस कर सुखी जिंदगी बसाई होगी। कौन कब आए इसका लेखा-जोखा तो नहीं पर उनके नामों से सहज ही उनके गांव का अनुमान लगाया जा सकता है बेड़िया-लक्ष्मणगढ़ इस बैड़ नाम के स्थान पर ही बसा यह इसी का वाचक है। अन्य सभी नाम जाजोदिया (जाजोद)चूड़ी वाला (चूड़ी) डीडवानिया (डीडवाना) सीकरीया (सीकर)बाजोरिया (बाजोर)चिराणिया (चिराणा) गोयनका (गोयन्द)सिंघानिया (सिंघाना)खेड़िया (खेड) टीबड़े वाला (टीबड़े के स्थान के) परसरामपुरिया (परसरामपुरा) आदि इसी के सूचक है। कुछ नाम पेशा, व्यवसाय के अनुसार हैं। पंसारी, वेद, जोशी, आदि। कुछ अन्य कारणों से भी है। यह विस्तृत विषय है इस पर स्वतंत्र रूप से विस्तार से लिखना आवश्यक होगा। अस्तु। सीकर के समर्थ शासकों ने अपने भुजाओं के बल और कूटनीतिक चतुराई के बल पर निरंतर अपनी सीमाओं का और अपनी समृद्धि का विस्तार किया। अपने सम वयस्कों में सर्वाधिक प्रतापी होने के कारण जयपुर राज्य से सम्मान रावराजा का विरुद पाया। इसके पहले सीकर के शासक राव ही कहलाते थे। लक्ष्मण सिंह ने यह गौरव प्राप्त कर सीकर का मान बढ़ाया। संवत्1980 के बाद गनेड़ी से जो महाजन आए वे गनेड़ीवाला कहलाए। राजा ने उन्हें सेठ कहा और सेठ नगर के सर्वमान्य और प्रभुत्व शाली हो गए। एक समय था जब आज का चौपडिया बाजार सेठों के बाजार के रूप में सुव्यवस्थित हुआ। चौपड़िया कुआं से श्री मुरली मनोहर जी के मंदिर जो विक्रम संवत्1990 मैं पूरा बना व आगे शीतला मंदिर के आगे तक भूमि इन सेठौं के ही अधिकार में थी। सेठों के कुएं इनके आगे धर्मशाला और छतरी नगर की उत्तरी सीमा छतरी तक ही थी। और बाद में शीतला मंदिर के आगे क्षेत्रों के शमशान तक ही थी जहां सेठों का पितरों का मंदिर है। पश्चिम में मुरली मनोहर जी के मंदिर के आगे सेठों की चार चौक की हवेली नोहरे बग्घी खाने आदि एवं सेठों का बाजार दोनों तरफ सामान दुकानों की कतार है और आगे मोरी दरवाजा, कभी नगर की सीमा इधर इधर तक ही थी। नगर की बसावट समान थी। सीधे रास्ते चौड़े रास्ते बीच में चौपड़ बाजार भी सीधे चौड़े नगर की गलियां भी चौड़ी सीधी किधर से भी जाइए समान दूरी। अब वह बात नहीं रही। रास्ते सीधे नहीं रहे टेढ़े मेढ़े हो गए। नई बसावट में नगर की इस विशेषता को बिल्कुल नजरअंदाज कर दिया। विचार पूर्वक निर्माण यह आधार सूत्र ही छोड़ दिया गया। अन्य बातों पर विचार, बाद पर छोड़कर आज कुछ सुझावात्मक बातों पर विचार उचित होगा।

वे ये हैं--

1. कोई भी नया निर्माण चौड़ाई एवं सिधाई को नजरअंदाज कर नहीं किया जाए यह नगरपालिका का दायित्व है।

2. लाल कुआं चौपड़ को लाल कुआं से लेकर पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण पहले चौरस्ते तक लाल रंग से रंग दिया जाए जो आंखों को सुहाना लगे। पहले तो रास्ते तक सभी दुकान मकान एक ही रंग में हो।

3. इसके आगे छोटी चौपड़ तक सभी मकान और दुकान आगे के दो चौराहों तक सफेद या हल्का नीला रंग दिया जाए।

4. पुरानी नगरपालिका से श्री मुरली मनोहर मंदिर तक सभी रास्ते तक, सभी दिशाओं तक, गहरे हरे रंग में या हल्के हरे रंग में रंग दिया जाए।

5. सभी एक्सप्रेस बसें जहाँ श्री चिरंजीलाल जी मुरारका की स्मृति में बनवाए वातानुकूलित प्रतीक्षा गृह है बस स्टैंड तक अनिवार्य रूप से आने की व्यवस्था की जाए।

6. नगर पालिका अविलंब एक नंदी शाला राज्य सरकार की सहायता से जन सहयोग से बदराणा जोड़ा के पास बनवाएं।

7. नगर पालिका एक सब्जी मंडी बनाएं।

8. गढ़ के ऊपर जाने के पूर्व एक दरवाजा बने जो रात में बंद रहे।

शशिकान्त जोशी
सम्पादक

गांव में आज भी है पेयजल की समस्या

500 बरस पुराना भूदोली गांव

52 हजार बीघा क्षेत्र में फैला है गांव, आबादी है करीब बीस हजार

गणेश्वर. उपखंड कार्यालय से मात्र 5 किलोमीटर दूरी पर बसा गांव भूदोली की 500 वर्ष पूर्व की बसावट हैं। राजपूत समाज के बाबा उदयसिंह ने गांव को बसाया था। गांव में सभी जाति धर्म के लोग आपसी मेल मिलाप भाईचारे से रहते हैं। एक दूसरे के सुख: दुःख में सहयोग करते हैं। करीब 20 हजार की आबादी वाला यह गांव 52 हजार बीघा जमीन में बसा हुआ है।

आस पास के गांवों में यह गांव क्षेत्रफल व भौगोलिक दृष्टि से अहम स्थान रखता है। सपाट लंबे चौड़े मैदान खेत खलियान, नदी, नाले गांव को आकर्षण का केंद्र बनाते हैं। शिक्षा क्षेत्र में बालिकाएं उच्च शिक्षा ग्रहण करती हैं। यहां के युवा फौज, पुलिस की नौकरी में जाना ज्यादा पसंद करते हैं। यहां एक लंबे चौड़े भवन में चलने वाला सीनियर विद्यालय है जहां सभी विषय खुले हुए हैं। ग्रामीण बाबूलाल अग्रवाल शंकर गेसका ने बताया कि यहां के लोग रोजी रोटी कमाने के लिए देश विदेशों में बसे हुए हैं। जिनके बड़े उद्योग चल रहे हैं।

इतिहास

बिसन दास का मंदिर, देवदास का मंदिर, उदयसिंह बाबा व बागी माता का मंदिर प्रसिद्ध हैं। पुरानी बावड़िया आज भी उपयोगी है। बड़ा अस्पताल, डाक घर, बैंक गांव का बड़ा बाजार सभी सुविधाएं मौजूद हैं।

नवाचार

यहां के शुभम गुप्ता नासिक में कलक्टर पद पर पदस्थापित हैं। एक माह पूर्व सीमा मीणा व समन्द्र सिंह का आरएएस में चयन होना गौरव की बात मान रहे हैं ग्रामीण।

समस्या

ग्रामीणों ने बताया कि हर 10 मिनट बाद आवागमन बस स्टैंड पर बना रहता है। विधायक सुरेश मोदी ने पेयजल समस्या का निराकरण किया।

मूलभूत सुविधाओं का आज भी अभाव

संतों की छतरियों से है इस गांव की पहचान

सिरसमंढा के जानकीशरण महंत ने बसाया था नाडा गांव

खाटूश्यामजी. आज से 350 साल पहले मंढा के जानकीशरण महंत ने आकर नाडा गांव बसाया था। 90 साल के गांव के सबसे बुजुर्ग हनुमान प्रसाद जाट ने बताया कि उस समय यहां जंगल था। गांव में राजा महाराजाओं के समय में बना जानकीनाथ (ठाकुरजी) का सबसे पुराना मंदिर है। जिसके पास उसी समय के कई संत मुनियों ने यहा रहकर कठोर तपस्या की थी।

जिनकी छतरियां आज भी यहां बनी हुई है। गांव की आबादी 800 के करीब है। जिनमें जाट, ब्राह्मण खाती, बलाई व गुर्जर समाज के लोग बसते है। गांव में आज भी मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। जिसके कारण ग्रामवासियों को परेशानी से जूझ रहे है। उक्त गांव को

कुमार, पूरणमल जाट आदि ने बताया कि गांव में पानी की समस्या है। गांव में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र केवल नाम का है, ग्रामीणों को बीमारी के समय बाय या खाटू जाना पड़ता है। पानी की टंकियों में पानी नहीं भरा जाता।

सामुदायिक भवन का अभाव है। नालियों के अभाव में गलियों में गंदा पानी का भराव रहता है। अब गांव को नई पंचायत से जोड़ने से विकास की कुछ आस जगी है।

हनुमान जयंती पर भरता है मेला

अब नवसृजित मगनपुरा ग्राम पंचायत में जोड़ दिया गया है।

आज भी मूलभूत सुविधाओं का अभाव

गांव में स्थित प्रचान बाग वाले बालाजी मंदिर स्थित है। हर वर्ष हनुमान जयंती के अवसर पर मेले का आयोजन होता है। जिसमें गांव सहित आसपास के ग्रामीण बड़ी संख्या में आते है। वहीं शादी व अन्य उत्सव पर जात जडूले भी यहां चढ़ाए जाते हैं।

पूर्णाहुति व भंडारा

आज गणेश्वर. नृसिंह धाम बेरा निमोद में चल रहे 11 दिवसीय व कुंडीय नृसिंह महायज्ञ की पूर्ण आहुति मंगलवार को होगी व दोपहर को भंडारा होगा। महंत गणेश दास ने बताया कि सोमवार तक 6 लाख आहुतियां दी जा चुकी थी। उन्होंने कहा कि सत्य की राह पर चलना दीन और दुखियों की मदद करना ही भगवान की भक्ति हैं। रविवार को यज्ञ स्थल पर देवाचार्य बलदेव दास महाराज, तुलसीदास, सीताराम दास, धर्मदास ने यज्ञ में आहुतियां दी।

वेदांता कॉलेज में कॅरियर विकास पर कार्यशाला हुई

रींगस वेदांता स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय में/ शनिवार को लोक प्रशासन विभाग की ओर से करियर विकास पर कार्यशाला आयोजित की गई। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. प्रशांत मदान ने की। प्राचार्य मदान ने छात्राओं को बताया कि किसी भी विषय में कॅरियर बनाने के लिए मेहनत, लगन, समर्पण भाव से नियमित अध्ययन करना चाहिए।

ऐसा करने पर सफलता जरूर मिलती है। उप प्राचार्या एवं विभागाध्यक्ष डॉ. अर्चना शर्मा ने लोक प्रशासन विषय में करियर संबंधी जानकारी दी। डॉ. घनश्याम बैरवा व नीतू शर्मा ने छात्राओं को विषय से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों, गतिविधियों, परीक्षा परिणाम, पाठ्यक्रम व कॅरियर विकास पर जानकारी दी।

संस्थान की पूर्व विद्यार्थी रितु चौधरी, मानसी हिंदका, मुस्कान जांगिड़ ने भी सफलता को लेकर सुझाव दिए। इस अवसर पर संस्थान के स्टॉफकर्मी, विद्यार्थी व क्षेत्र के प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

समय के साथ चलने से ही समाज की उन्नति सम्भव

प्रतिभाओं को किया सम्मानित । रामगढ़ शेखावाटी. मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार समिति रामगढ़ के दीपावली स्नेह मिलन व प्रतिभा सम्मान समारोह शनिवार को आयोजित किया गया। समारोह में सीकर स्वर्णकार समिति अध्यक्ष त्रिलोकचंद जालू ने कहा कि वह व्यक्ति और समाज ही सफल होता है जो समय के साथ कदम से कदमताल करता है। किसी भी समाज का उत्थान और विकास शिक्षा के प्रसार से ही होता है। स्वर्ण समाज में वर्तमान युग के अनुसार आधुनिक शिक्षा का प्रचार प्रसार नहीं हो पा रहा है। समाज के लिये यह चिन्ता का विषय है।

फतेहपुरिया दरवाजा बाहर बबेरवाल भवन में आयोजित समारोह के विशिष्ट अतिथि मंडावा नगर पालिकाध्यक्ष नरेश कुमार नारनौली ने समाज को अपनी प्रतिभा सभी क्षेत्र में सिद्ध करने की बात कही। समारोह के अध्यक्ष विश्वनाथ बबेरवाल व विशिष्ट अतिथि रामकुमार तोषावड़ कोटडी स्वर्णकार समाज अध्यक्ष, • रामप्रसाद जालु लक्ष्मणगढ़ स्वर्णकार समाज अध्यक्ष, सुशील कुमार मायच फतेहपुर स्वर्णकार समाज अध्यक्ष, जयचंद मूंण रतनगढ़ स्वर्णकार समाज अध्यक्ष, राजकुमार जांगलवा सरदारशहर समाज अध्यक्ष, विष्णुप्रसाद सणरवा चूरू समाज अध्यक्ष, विश्वनाथ तुणघर झुंझुनूं शहर अध्यक्ष, प्रमोद कुमार कुलथिया मंडावा शहर अध्यक्ष, व सत्यनारायण मौसूण रतननगर स्वर्णकार समाज अध्यक्ष आदि थे। समारोह में रामगढ़ मेढ क्षत्रिय स्वर्णकार समिति के नवनिर्वाचित पदाधिकार अध्यक्ष विनोद बबेरवाल, मंत्री ओमप्रकाश ठाकराण, कोषाध्यक्ष ललित धूपड आदि पदाधिकारियों को जयपुर समिति की ओर से अभिनंदन पत्र भेट कर सम्मानित किया गया। समारोह में नगर के स्वर्णकार समाज के बंधु मौजूद थे। समारोह में अतिथियों ने चिकित्सा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिये डा. आर.एल दीक्षित, उद्योग के क्षेत्र में ओम् प्रकाश जौहरी, समाजसेवा के क्षेत्र में ओमप्रकाश रोडा, हरिप्रसाद सिरसीवाल, जुगलकिशोर नारनौली, बनवारीलाल बबेरवाल, पूर्णमल जयवाल चूरू, जया सोनी पार्षद, चिकित्सक महेन्द्र सैनी, अशोक दाधीच को शाल ओढ़ा, श्रीफल अभिनंदन पत्र भेट कर सम्मानित किया गया ।

लोकनृत्य में जीडी रूइया की छात्राएं विजेता

रामगढ़ नागरिक परिषद कोलकाता की ओर से शनिवार को सेठ आरएन रुइया बालिका विद्यालय में त्रिवेणीदेवी आनंदीलाल पौद्दार स्मृति राजस्थानी सामूहिक लोकनृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 14 शिक्षण संस्थाओं की टीमों ने भाग लिया। इसमें राजकीय जीडी रूड्या उच्च माध्यमिक विद्यालय की टीम प्रथम, बाल मंदिर अंग्रेजी माध्यम द्वितीय तथा बाल मंदिर हिन्दी माध्यम तृतीय स्थान पर रही। परिषद् अध्यक्ष राधेश्याम ढंढ की अध्यक्षता में आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि कोलकाता प्रवासी सुबीर पौद्दार, विशिष्ट अतिथि सीताराम शर्मा एवं मधुसूदन शर्मा, अशोक लढ़िया थे ।

लोकनृत्य में जीडी रूड्या की छात्राएं विजेता नरेन्द्रसिंह, राधेश्याम शर्मा, राजेन्द्र सर्राफ, संजय कीर्तनिया, सज्जन मोलीसरिया, गणेशमल जोशी, नरेन्द्रसिंह विशिष्ट अतिथि थे। प्रतियोगिता में बनवारीलाल शर्मा, दीपक चोटिया, रमेश जोशी, किशोरीलाल पचलंगिया, विजय शर्मा, ताराचन्द काछवाल, ओमप्रकाश दाधीच आदि मौजूद थे।

खंडेला महाभारत काल से भी पूर्व रामायण काल में भी वैभवशाली नगर रहा है।

खंडेला के बारे में इतिहासकारों ने विस्तृत रूप से लिखा है, उसमें जेम्स बांड के बाद पंडित सूर्य नारायण जी शर्मा का 'खंडेला का इतिहास' प्रसिद्ध है। सुरजन सिंह शेखावत का

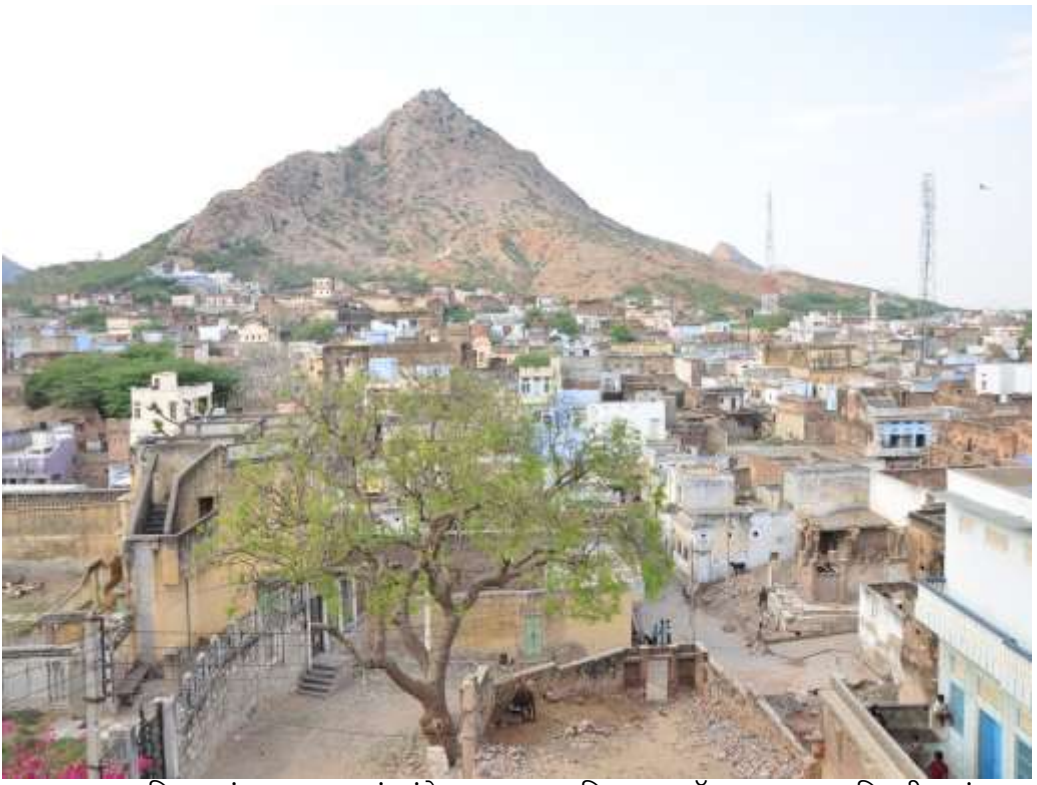

'गिरधर वंश प्रकाश ' एवं 'खंडेला का वृहत इतिहास' । डॉ रघुनाथ प्रसाद तिवारी 'उमंग' का 'खंडेला क्षेत्र का सांस्कृतिक वैभव। श्री नंदकिशोर शर्मा कथा भट्ट जयपुर का 'खंडेला राजवंश प्रकाश ग्रंथ अपना विशेष स्थान रखते हैं।

खंडेला शहर के मध्य से बहने वाली बरसाती कातली नदी ने इस नगर को दो खंडों में विभाजित कर रखा है। इसी कारण इसका पुरातन नाम खंड इला है। खंड इला खंड का अर्थ होता है भाग और इला का अर्थ होता है भूमि, यानी वह भूमि जो दो भागों में विभाजित है। खंड इला का अपभ्रंश होते होते. यह खंडेला हो गया।

कई इतिहासकारों का मत है की खंड प्रस्थ राजा के नाम से इसका नाम खंडेला पड़ा, कुछ इतिहासकार सूर्यवंशी राजा मंडलीक खंडेल गिर पर राज करते थे अतः इसका नाम खंडेला पड़ा। डॉ रघुनाथ प्रसाद तिवारी के ग्रंथ 'खंडेला क्षेत्र का सांस्कृतिक वैभव' में एक दोहा इस

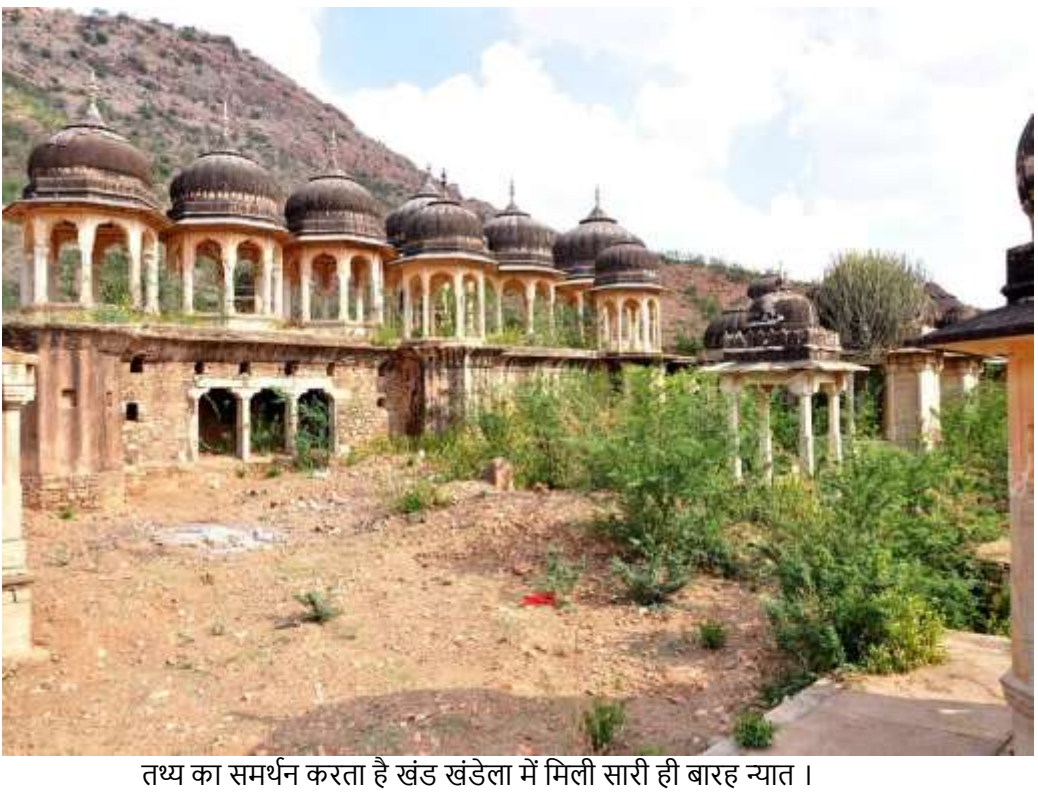

तथ्य का समर्थन करता है खंड खंडेला में मिली सारी ही बारह न्यात ।

खंड प्रस्थ नृप के समय जीमा दाल अरु भात । खंडेलवाल वैश्य, माहेश्वरी, सरवगी जैन और बिजावर्गी जाति का उद्गम स्थल खंडेला ही है। खांडल विप्र खंडेलवाल ब्राह्मण भी खंडेला को ही अपना उद्गम स्थान मानते हैं।

रम्य प्राकृतिक वातावरण में स्थित खंडेला पश्चिम-उत्तर पश्चिम-दक्षिण और उत्तर दिशा अरावली पर्वतमाला की श्रृंखला से घिरा हुआ है। इतिहासकार पंडित सूर्य नारायण जी शर्मा ने अपने खंडेला के इतिहास में राजस्व आय का वर्णन करते हुए लिखा है, उसके अनुसार, मथुरा से लेकर द्वारका तक का क्षेत्र लगान के ती रूप में खंडेला के शासक को लगान राशि भेजते थे।

इस क्षेत्र में जल संरक्षण के लिए 52 बावडियां हैं जिनमें तेरह बावडियां तो खंडेला में ही है। यहां के तालाब भी प्रसिद्ध है, पांडवों की बावड़ी के पास रसोड़ा तालाब जिसके दो दिशाओं में पुरातन शिवालय और देवियों के मंदिर बने हुए हैं। यहां के खंडेश्वर महादेव के • मंदिर का निर्माण निर्वाण राजा नरदेव ने करवाया था। यहां का चामुंडा का मंदिर, श्री नरसिंह मंदिर, बांके बिहारी मंदिर, घाटेश्वर शिव मंदिर, भूतेश्वर महादेव, किंगरिया बालाजी, 'आवलदे सावलदे मंदिर प्रसिद्ध है।

भारत प्रसिद्ध आस्था के केंद्र लोहार्गल तीर्थ, शाकंभरी मंदिर, जीण माता मंदिर, खाटू श्याम जी इसी क्षेत्र में आते थे। रेवासा धाम भी खंडेला के राजा रायसल जी का प्रमुख कस्बा और परगना मुख्यालय भी था। खंडेला के शासकों का वर्णन इतिहासकारों के अनुसार इस प्रकार है। यहां महाभारत काल के पश्चात मत्स्य, मौर्य, कुषाण, प्रतिहार, तंवर, डाहिल, चौहान, निर्माण एवं शेखावतों का शासन रहा है।

शेखावतों के शासनकाल में बहादुर सिंह जी के पुत्र केसरी सिंह जी के समय में खंडेला दो राज्यों में विभाजित हो गया। बड़ा पाना एवं छोटा पाना, उस समय 'मशः उदय सिंह जी बड़ा पाना एवं फतेह सिंह जी छोटा पाना के शासक बने।

एक समय था, जब खंडेला पुरानी काशी के नाम से जाना जाता था, यहां प्रसिद्ध संतों का वास रहा है राजा द्वारकादास, शेखावाटी की मीरा करमैती बाई, शिवनंद जी भिंडा, बख्तावर दास जी, सुमेर दास जी सियाराम दास जी, संत कवि शिवदीन राम, विशंभर दास जी यहां के प्रसिद्ध संतों में रहे हैं। यह धरती वीरों की धरती रही है, यहां महाराज शेखाजी, रायसल जी, केसरी सिंह जी और छापोली के सुजान सिंह जी ने तो औरंगजेब की सेना से मोहन जी के मंदिर की रक्षार्थ युद्ध किया और जुझार होने के बाद भी युद्ध करते रहे बड़ी श्रद्धा के साथ आज भी लोग यह पंक्तियां याद करते हैं।

झिरमिर झिरमिर मेहो बरसे मोरां छतरी छाई जी । कल में हो तो आव सुजाणा फौज देवरे आई जी ।। वर्तमान समय में भी शिक्षा और राजनीति

में यह क्षेत्र अपना अलग ही स्थान रखता है। डॉ एम सी खंडेलवाल, डॉ मान चंद खंडेला, डॉ मातादीन अग्रवाल, ने शिक्षा के क्षेत्र में यहां का नाम रोशन किया है। श्री राम गोटे वाला, गोपाल सिंह खंडेला, महादेव सिंह खंडेला और बंशीधर खंडेला ने राज्य और केंद्र की सरकारों में मंत्री पद पर रहकर क्षेत्र का मान बढ़ाया है। नगर महाभारत काल से भी पूर्व रामायण काल में भी वैभवशाली नगर रहा है।

सुरोलिया बने हिंदू महासभा प्रदेश उपाध्यक्ष

सीकर | अखिल भारतीय हिंदू महासभा के प्रदेश अध्यक्ष रविंद्र सिंह सोलंकी ने संजय कुमार सुरोलिया को महासभा के प्रदेश उपाध्यक्ष का दायित्व सौंपा है। सोलंकी ने सुरोलिया को प्रदेश उपाध्यक्ष का दायित्व प्रदान करते हुए दो माह में प्रदेश महासभा की सदस्यता विस्तार करने तथा प्रदेश व जिला कार्यकारिणी के विस्तार की जिम्मेदारी भी सौंपी है।

रघुनाथ बालिका स्कूल लगातार चौथी बार बना विजेता

सीकर. सीकर के डेफोडिल्स स्कूल में हुई 65 वीं 14 वर्षीय जिला बास्केटबॉल प्रतियोगिता में लक्ष्मणगढ़ कस्बे की रघुनाथ बालिका स्कूल ने लगातार चौथी बार विजेता बन इतिहास रचा है। संस्था प्रधान गायत्री पोरवाल व बास्केटबॉल कोच मनोज पांडेय ने बताया कि रविवार देर शाम को खेले गए फाइनल मुकाबले में रघुनाथ बालिका स्कूल की टीम ने एक तरफा मुकाबले में शेखावाटी स्कूल सेवद बड़ी को 28-4 से हराकर ट्रॉफी पर कब्जा जमाया। रघुनाथ बालिका स्कूल टीम की ओर से सरिता कुशवाहा, प्रियंका पारीक, सोनिया कुशवाहा व भारती कुमावत ने बेहतरीन प्रदर्शन किया।

टीम की सफलता पर सोमवार को लक्ष्मणगढ़ पहुंचने पर सभी खिलाडियों का स्कूल परिसर में भव्य अभिनंदन किया गया।

इस मौके पर स्कूल सचिव ओमप्रकाश जांगिड़, महाविद्यालय सचिव रामकरण जोशी, कॉलेज प्राचार्य आलोक शर्मा,बास्केटबॉल प्रशिक्षक रामस्वरूप सैनी, महेंद्र बगडिया़, सज्जन जांगिड़, सुनीता बागड़ी, यजुवन्ति सैनी, मनीषा सैनी सहित अनेक खेलप्रेमी मौजूद थे।

सम्पादक,प्रकाशक,मुद्रकः शशिकान्तजोशी, जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राजस्थानकृष्णाप्रिन्टर्स के लिये सागरकम्प्यूटर, जयपुर द्वारा मुद्रित,प्रबन्ध सम्पादक- डॉ महेन्द्रआचार्य, समाचार सम्पादक- भानुप्रकाश जोशी